कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 03 भाग 12, (मई, 2024)
पृष्ठ संख्या 11–13

अमरूद की फसल के प्रमुख रोगों का प्रबंधन

आकाश वर्मा
बीएससी. (ऑनर्स) बागवानी, चतुर्थ वर्ष छात्र,
बागवानी महाविद्यालय, एमएचयू, करनाल, 132001, भारत।
Email Id: –akashcoh@mhu.ac.in

परिचयः

अमरूद एक प्रिय फल है जो हमारी स्वाद कलिकाओं को प्रसन्न करता है और आवश्यक पोषक तत्व प्रदान करता है। हालाँकि, यह सुस्वादु फल अपनी चुनौतियों से रहित नहीं है। अमरूद की फसलें अक्सर बीमारियों से ग्रस्त रहती हैं जो उपज और गुणवत्ता पर गंभीर प्रभाव डाल सकती हैं। इस लेख में, हम अमरूद की फसल को प्रभावित करने वाली प्रमुख बीमारियों के बारे में विस्तार से चर्चा करेंगे और उन प्रभावी प्रबंधन रणनीतियों का पता लगाएंगे जिन्हें किसान अपनी फसल की सुरक्षा के लिए अपना सकते हैं।

1. उकठा रोगः

अमरूद का मुरझाना, जो मिट्टी में पैदा होने वाले कवक *Fusarium oysporum spp.* के कारण होता है, एक संवहनी रोग है जो पौधे की जड़ प्रणाली पर हमला करता है। अमरूद के मुरझाने के शुरुआती लक्षणों में पत्तियों का धीरे–धीरे पीला पड़ना और गिरना शामिल है, जिसे आसानी से सामान्य जल तनाव या पोषक तत्वों की कमी के रूप में देखा जा सकता है। जैसे–जैसे रोग बढ़ता है, पत्तियाँ भूरी होकर सूखने लगती हैं और पौधे की वृद्धि रुक जाती है। अमरूद के मुरझाने की विशिष्ट विशेषताओं में से एक तने के संवहनी ऊतक में गहरे भूरे रंग का मलिनकिरण है, जिसे तने को क्षैतिज रूप से काटने पर देखा जा सकता है। यह पौधे की पानी और पोषक तत्वों को अवशोषित करने की क्षमता को बाधित करता है, जिससे अंततः पत्तियां मुरझा जाती हैं, पत्तियां पीली हो जाती हैं और यहां तक कि पौधे की मृत्यु भी हो जाती है। यह रोग विशेष रूप से उच्च आर्द्रता और गर्म तापमान वाले क्षेत्रों में प्रचलित है, जिससे कवक के विकास और प्रसार के लिए अनुकूल वातावरण बनता है। मिट्टी का जमाव, खराब जल निकासी और दूषित रोपण सामग्री सभी रोग के प्रसार में योगदान कर सकते हैं।

उकठा रोग से प्रभावित पत्तियाँ

उकठा रोग से प्रभावित जड़ें

2. एन्थ्रेक्नोज

अमरूद एन्थ्रेक्नोज मुख्य रूप से कवक *Colletotrichum gloeosporioides* के कारण होता है। यह रोगजनक गर्म और आर्द्र जलवायु में पनपता है, जिससे उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्र विशेष रूप से असुरक्षित हो जाते हैं। यह रोग अक्सर पहले पत्तियों पर छोटे, पानी से लथपथ धब्बों के रूप में प्रकट होता है, जो बाद में बड़ा हो जाता है और गहरे भूरे या काले रंग का हो जाता है। इन घावों के कारण पत्तियां समय से पहले गिर सकती हैं, जिससे अमरूद के पेड़ का समग्र स्वास्थ्य कमजोर हो सकता है। सबसे अधिक ध्यान देने योग्य लक्षणों में से एक है अमरूद के फलों पर घावों का दिखना। प्रारंभ में, ये घाव गुलाबी केंद्र वाले छोटे, धंसे हुए धब्बे होते हैं। जैसे–जैसे वे परिपक्व होते हैं, घाव बढ़ते हैं और गहरे रंग के हो जाते हैं, जिससे फल स्वादिष्ट और अप्राप्य हो जाता है। एन्थ्रेक्नोज टहनियों और तनों को भी प्रभावित कर सकता है, जिससे कैंकर हो सकता है जिससे फल सड़ने लगते हैं और फलों का उत्पादन कम हो जाता है। कवक दूषित मिट्टी, पौधों के मलबे और यहां तक कि बारिश की फुहारों, हवा और छंटाई और कटाई जैसी मानवीय गतिविधियों के माध्यम से भी फैल सकता है। गीली स्थितियों में, कवक चिपचिपा, गुलाबी रंग का बीजाणु समूह पैदा करता है जो अक्सर संक्रमित पौधे के हिस्सों पर दिखाई देता है। ये बीजाणु रोग के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

फलों पर रोग की गंभीरता

3. रतुआ रोग

यह रोग *Puccinia psidii* नामक कवक के कारण होता है, जिसे सबसे पहले दक्षिण अमेरिका में पहचाना गया था। अमरूद के जंग के लक्षणों में पत्तियों, तनों और कभी–कभी अमरूद के पेड़ के फलों पर जंग के रंग के धब्बे का दिखना शामिल है। ये धब्बे फुंसियों में विकसित हो सकते हैं जो बीजाणु छोड़ते हैं, जो रोग के प्रसार में योगदान करते हैं। जैसे–जैसे संक्रमण बढ़ता है, प्रभावित पत्तियाँ पीली पड़ सकती हैं, मुरझा सकती हैं और समय से पहले गिर सकती हैं, जिससे फलों का उत्पादन और समग्र पेड़ का स्वास्थ्य कम हो सकता है। अमरूद में जंग अमरूद उत्पादकों के लिए एक महत्वपूर्ण चिंता का विषय है, क्योंकि इससे फल की उपज और गुणवत्ता में कमी के कारण काफी आर्थिक नुकसान हो सकता है। यह रोग हवा से फैलने वाले बीजाणुओं के माध्यम से फैलता है और उच्च आर्द्रता और वर्षा जैसे पर्यावरणीय कारकों से इसका तीव्र संचरण संभव हो सकता है।

रतुआ से प्रभावित पत्तियाँ

रतुआ से प्रभावित फल

एकीकृत रोग प्रबंधन

बाग योजना और रोपणः

- अच्छे जल निकास वाले खेतों में बाग की योजना बनाएं।
- भारी मिट्टी में रोपण से बचें।
- सिंचाई या बारिश से तने के आसपास पानी जमा होने से रोकें।
- रोगग्रस्त पौधों को जड़ सहित उखाड़कर नष्ट कर दें।
- पुनः रोपण से पहले गड्ढे को 2 प्रतिशत फॉर्मेलिन से धुंआ कर लें।
- नवोदित पौधों के लिए रूटस्टॉक के रूप में सरदार या पुर्तगाल के पौधों का उपयोग करें।
- गड्ढे को सरकंडा तथा पुराने गीले बोरे से ढक दें।
- जैविक नियंत्रण के लिए Aspergillus niger strain AN–17 का उपयोग करें, नए पौधे लगाते समय गड्ढों में लगाएं।
- स्वस्थ अमरूद के पौधों को दोबारा लगाने से पहले 14 दिनों के लिए मिट्टी को खुला रखें।
- मुरझाने के प्रति प्रतिरोधी रूटस्टॉक्स का उपयोग करने पर विचार करें, जैसे क्रॉस ऑफ सिडियम मैले • पी. गुआजावा (उकठा नियंत्रण)।

रासायनिक विधियाँ

- मार्च, जून और सितंबर में प्रत्येक पौधे के बेसिन में 15 ग्राम ब्तइमदकपउ डालें।
- मार्च और सितम्बर में पौधों पर 0.3 प्रतिशत जस्ता का छिड़काव करें।
- छंटाई के बाद रोगग्रस्त शाखाओं पर 0. 3 प्रतिशत ब्वचचमत Oychloride घोल का छिड़काव करें।
- रोग (एन्थ्रेक्नोज) की शुरुआत के तुरंत बाद बोर्डो मिश्रण (3:3:50) या ब्वचचमत OÛychloride (0.3%) का छिड़काव करें।
- कटाई के बाद, उपचार के लिए, 0.05% Tetracyclene में 20 मिनट की डुबकी एन्थ्रेक्नोज के लिए प्रभावी है ।